

# स्वाइन फ्लू: उन्माद से परे कुछ तथ्य

डॉ. राज बी. सिंह

स्वाइन फ्लू (H1N1 S-OIV) वायरस और बैक्टीरिया से होने वाले कई संक्रमणों में से एक है। इस चुनौती का मुकाबला गंभीरतापूर्वक करने की ज़रूरत है मगर व्यापक उन्माद और बदहवासी से अनुपयुक्त व अनुपयोगी कार्रवाइयां ही उभरती हैं।



अंग्रेज़ी में 'स्वाइन' अच्छा शब्द नहीं है। इसका उपयोग उन लोगों के लिए किया जाता है जिनसे आप नफरत करते हैं। दूसरी ओर 'पिग' शब्द के साथ ऐसी कोई नकारात्मक छवि नहीं जुड़ी है। दरअसल पिग नामक जानवर कुछ लोगों को अच्छा भी लगता है। यही कारण है कि फ्लू की ताज़ा महामारी को पिग फ्लू की बजाय स्वाइन फ्लू कहा गया है। आज स्थिति यह है कि आप चाहें न चाहें, स्वाइन फ्लू के बारे में सुनने को मजबूर हैं।

यह फ्लू एक वायरस की वजह से होता है। इस वायरस ने पहले सुअरों को संक्रमित किया था और इसे नाम दिया गया था H1। यह वायरस कभी-कभार मनुष्यों को भी संक्रमित करता था मगर महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह मनुष्य से मनुष्य में नहीं फैलता था। अब इस बात की संभावना तो बहुत कम थी कि हममें से कोई सुअर से टकराता, इसलिए इस वायरस के इन्सानों में फैलने की संभावना बहुत ही कम थी।

वायरस दरअसल सजीवों में सबसे बुनियादी होते हैं। ये मूलतः एक डी.एन.ए. या आर.एन.ए. की लड़ी होते हैं जो समस्त जीवन के निर्माण की इकाई है। वायरसों में यह गुण होता है कि इस डी.एन.ए. या आर.एन.ए. की नकल बनाते समय इनमें उत्परिवर्तन यानी म्यूटेशन की संभावना बहुत अधिक होती है। इन म्यूटेशन की वजह से ये अपने मेजबान जीव (जैसे इन्सानों) के शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र की आंखों में धूल झोंक देते हैं। ये उत्परिवर्तन कभी-कभार वायरस की प्रकृति को भी बदल देते हैं। सुअरों को संक्रमित करने वाले H1 वायरस ने यही किया। इस नए अवतार में सबसे अहम गुण यह पैदा हो गया था कि यह मनुष्य से मनुष्य में फैल सकता है। यह परिवर्तन इतना महत्वपूर्ण था कि इसके नाम

में बदलाव ज़रूरी हो गया।

इस प्रकार से H1N1 प्रकट हुआ। इसकी डी.एन.ए. शृंखला तीन अलग-अलग वायरसों से मिलकर बनी है - ये तीन अलग-अलग वायरस पक्षियों, सुअरों और इन्सानों को संक्रमित करते हैं। अब यदा-कदा कोई मनुष्य किसी सुअर को H1N1 से संक्रमित कर सकता है मगर इस संक्रमण का वजूद मूलतः मनुष्यों में ही है।

पहली बार H1N1 वायरस मनुष्यों में 1918 में पाया गया था। इन सालों में इसी तरह की किस्मों से कई महामारियां फैल चुकी हैं। इन्हें मानव इंफ्लूएंज़ा-ए (मौसमी) कहा गया था और ये सभी H1N1 ही थे। वर्तमान वैश्विक महामारी (पैनडेमिक) एक बार फिर सुअरों से संक्रमण की वजह से हुई है। पहला मामला यूएसए के विस्कॉन्सिन में एक 17 वर्षीय किशोर में 2008 में देखा गया था। वायरस की इस किस्म को कभी-कभी S-OIV भी कहा जाता है।

वायरस कई बीमारियां पैदा करते हैं। जैसे इंफ्लूएंज़ा, सामान्य जुकाम, पोलियो, चेचक, माता, मस्तिष्क ज्वर, रैबीस, खसरा वगैरह। कई वायरसों की शिनाख्त और नामकरण अभी नहीं हुआ है मगर ये कई गंभीर बीमारियां पैदा करते हैं। भारत में रोज़ाना हज़ारों बच्चे श्वसन मार्ग के गंभीर संक्रमण या गंभीर गैस्ट्रोएंटेराइटिस की वजह से मरते हैं। ये रोग प्रायः वायरस की वजह से होते हैं। भीड़भाड़, अस्वच्छता, और कुपोषण न सिर्फ संक्रमण बल्कि मौत की आशंका को भी कई गुना बढ़ा देते हैं।

अधिकांश फ्लू के समान स्वाइन फ्लू भी मुख्य रूप से ऊपरी श्वास



मार्ग को प्रभावित करता है। इस वजह से इसका फैलाव आसान हो जाता है क्योंकि वायरस छींक और खांसी के दौरान निकलने वाली फुहार के साथ बाहर आता है। आम लक्षणों में बुखार, खांसी, बदन दर्द, सुस्ती के अलावा गंभीर मामलों में मानसिक विभ्रम और श्वसन की नाकामी भी हो सकती है। जब मरीज़ की मौत होती है तो वायरस भी नष्ट हो जाता है। इसलिए समय के साथ ज़्यादा घातक जानलेवा किस्में खत्म होती जाती हैं और अपेक्षाकृत मृदु किस्में ही शेष बचती हैं। यानी धीरे-धीरे संक्रमण मृदु होता जाता है। फ्लू का वायरस आम तौर पर, लगभग अनिवार्य रूप से, चंद महीनों में आबादी के एक बड़े हिस्से को संक्रमित कर देता है, जब तक कि कारगर टीके विकसित करके पूरी आबादी को न दे दिए जाएं। मगर टीके स्वयं समस्याओं को जन्म दे सकते हैं और कभी-कभी मौत का कारण भी बन सकते हैं।

सामान्य जुकाम और मृदु किस्म के फ्लू जैसे संक्रमणों के मामले में शायद बेहतर होगा कि इसे गैर-लाक्षणिक या हल्के संक्रमण के रूप में फैलने दिया जाए ताकि समुदाय में कुदरती प्रतिरोध क्षमता का विकास हो पाए। एक अनुमान के मुताबिक H1N1 (S-OIV) वायरस ने यूएसए में करीब 25 लाख लोगों को संक्रमित किया है। अतीत में हुए इसी प्रकार के वायरस संक्रमणों की महामारियों ने कई लोगों में काफी प्राकृतिक प्रतिरोध क्षमता छोड़ी है, जिसकी वजह से वे वर्तमान महामारी में ताज़ा संक्रमण से सुरक्षित रहे हैं।

वायरसों के खिलाफ एण्टिबायोटिक दवाइयों का कोई असर नहीं होता। विशिष्ट वायरस-रोधी एजेंट, जैसे ओस्टेलामिविर (टैमीफ्लू) H1N1 के खिलाफ कारगर हैं बशर्ते कि इनका उपयोग संक्रमण की प्रारंभिक अवस्था में किया जाए। बेहतर तो यही है कि दो दिन के अंदर इनका उपयोग शुरू हो जाए। मगर दिक्कत यह है कि शुरुआती लक्षण सामान्य-से होते हैं (मतलब H1N1 के कोई विशिष्ट लक्षण नहीं होते)। इसका मतलब होगा कि सामान्य जुकाम जैसे साधारण वायरस संक्रमणों वाले लाखों संभावित लोगों की जांच करना होगी या जांच किए बगैर उन्हें वायरस-रोधी उपचार देना होगा। यह रणनीति अव्यावहारिक होगी

और इसके लाभ भी सुस्थापित नहीं हैं।

स्वाइन फ्लू (H1N1) वायरसों और बैक्टीरिया के कारण होने वाले कई संक्रमणों में से एक है। भारत के संदर्भ में, इनमें से कई संक्रमण स्वाइन फ्लू के मुकाबले कहीं ज़्यादा संक्रामक और खतरनाक हैं। मसलन, भारत में टीबी से रोज़ाना हज़ारों लोग मरते हैं।

स्वाइन फ्लू के बारे में कुछ तथ्य ध्यान रखने योग्य हैं:

1. स्वाइन फ्लू के अधिकांश मरीज़ टैमीफ्लू के ज़रिए या उसके बगैर भी स्वस्थ हो जाएंगे।
2. समय के साथ यह वायरस कम घातक होता जाएगा।
3. कई लोगों में तो पहले से ही कुदरती प्रतिरोध क्षमता मौजूद होगी।
4. कुछ समय बाद आबादी का एक बड़ा हिस्सा जांच में स्वाइन फ्लू पॉज़िटिव पाया जाएगा क्योंकि कई लोगों में संक्रमण तो होगा मगर वे बीमार नहीं होंगे। इसकी वजह से कई अन्य बीमारियों को स्वाइन फ्लू मानने की भूल हो सकती है।

इस तरह संक्रमण के व्यापक प्रसार के कुछ संभावित लाभदायक परिणाम हो सकते हैं:

1. संक्रमणों व उनके प्रसार की प्रकृति की बेहतर समझ, बेहतर स्वच्छता और सारे संक्रमणों की रोकथाम के बेहतर उपाय विकसित हो सकते हैं।
2. रोकथाम के ये उपाय टीबी जैसे अन्य संक्रमणों के प्रसार को भी रोक सकते हैं।
3. सरकार व जनता स्वास्थ्य सेवा तंत्र की खामियों व सुधार के उपायों के प्रति अधिक जागरूक हो सकते हैं।

मगर भय के अत्यधिक प्रचार-प्रसार के हानिकारक असर भी हो सकते हैं:

1. व्यापक अफरा-तफरी और बदहवासी। इनकी वजह से अनुपयुक्त व अनुपयोगी कार्रवाई होने की आशंका।
2. दुर्लभ वित्तीय संसाधनों को ज़रूरी क्षेत्रों से हटाकर अलाभदायक गतिविधियों में लगाए जाने का डर।
3. डॉक्टरों और अस्पतालों से चिकित्सकीय हस्तक्षेप की झूठी अपेक्षाएं। (स्रोत फीचर्स)

---

डॉ. राज बी सिंह अपोलो अस्पताल, चेन्नै में मुख्य श्वसन चिकित्सक हैं

---